शाम को चूल्हा जलने से पहले माँ

माँ में तेरे जिगर से बना
तेरा ही एक जिगर का टुकड़ा हूँ
तेरे आँखों का तारा हूँ

तेरी आँचल को पिला कर

कर गीला और हमने बचपन में
तेरी आँचल को जब मन तब
की माँ आपकी कर दया से मैं पहुँच पाया हूँ आज इस मुकाम तक यहाँ

इसलिए मेरे हर कमाई के हर एक खोटा सिक्का तक
सिक्के ही कर जाता है
सीखे पर खुद को तेरे नाम को हस्ताक्षर

इसलिए माँ बिन माँगे आपका

मेरे
कमाई का हर एक खोटा सिक्का तक को पहुँच जाएगा आपके हाथ में
शाम को चूल्हा जलने से पहले माँ

तेज नारायण राय